# 11
# सामाजिक क्रिया: अवधारणा और सिद्धांत

* *बीना एंटनी एवं अर्चना कौशिक*

## प्रस्तावना

व्यावसायिक सामाजिक कार्य में लोगों के साथ कार्य करने की छः कार्य पद्धतियों की पहचान की गई है इनमें से तीन तो बुनियादी या आरंभिक पद्धतियां हैं। ये वैयक्तिक (केस) कार्य, समूह कार्य तथा सामुदायिक संगठन हैं। दैनिक कार्यों में सामाजिक कार्यकर्ता लोगों के साथ कार्य करने में प्रायः तीन पद्धतियां--व्यक्तिगत सेवार्थी के साथ कार्य करना, छोटे समूहों के साथ समूह कार्य तथा समाजशास्त्रीय ढंग से परिभाषित समुदायों के साथ कार्य करने के लिए इन पद्धतियों का प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक कार्य की तीन गौण या संबद्ध पद्धतियां सामाजिक क्रिया, समाज कार्य अनुसंधान और समाज कल्याण प्रशासन हैं। सामाजिक क्रिया, सामाजिक कानून, प्रचार और उचित कार्यवृत्त/कार्यक्रमों के माध्यम से जनसाधारण की भलाई के लिए प्रयास करता है। सामाजिक क्रिया जब सामाजिक संरचना में कुछ परिवर्तन लाना आवश्यक हो, या किसी ऐसे नकारात्मक परिवर्तन के होने से रोकना आवश्यक हो जो सामान्य लोगों या व्यापक आबादी को प्रभावित कर सकते हैं तो ऐसी स्थिति में सामाजिक क्रिया की अहम् भूमिका होती है। 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' जनता की बेहतरी के लिए किया जाने वाला सामाजिक क्रिया का एक सर्वोतम उदाहरण है। आइए हम सामाजिक क्रिया की अवधारणा के बारे में विस्तार के साथ कुछ चर्चा करें।

## समाजिक क्रिया की अवधारणा

सामाजिक क्रिया को व्यावसायिक सामाजिक कार्य की ही एक सहायक पद्धति के रूप में माना जाता है। लोगों के साथ कार्य करने की पद्धतियों में से एक पद्धति होने के कारण यह समाज कार्य व्यावसायिकों में विवाद का विषय बना हुआ है। सामाजिक क्रिया समाज कार्य की वह पद्धति है जो सामाजिक प्रणाली में कोई परिवर्तन करने या विपरीत परिवर्तनों से बचाव के लिए जनता को सक्रिय करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। यह सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं का परिवर्तन या सुधारने का एक संगठित प्रयास है।

---

* *बीना एंटनी एवं अर्चना कौशिक, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली*

कुछ सामाजिक समस्याएं जैसे दहेज प्रथा, प्राकृतिक संशोधनों का विनाश, मद्यपान, खराब आवास, स्वास्थ्य आदि को सामाजिक क्रिया के माध्यम से ठीक किया जा सकता है।

व्यावसायिक सामाजिक कार्य की एक पद्धति के रूप में सामाजिक क्रिया, इसका कार्य क्षेत्र, रणनीतियाँ और प्रयुक्त की जाने वाली युक्तियाँ, मद्धति के रूप में इसकी स्थिति तथा समाज कार्य के व्यावहारिक अभ्यास में इसकी सार्थकता एक चर्चा का विषय बना हुआ है। मैरी रिचमोंड पहली सामाजिक कार्यकर्ता थी जिसने 1992 में सामाजिक क्रिया शब्द का प्रयोग किया। वे सामाजिक क्रिया को प्रचार और सामाजिक कानून के द्वारा जनसाधारण के बेहतरी के रूप में परिभाषित करती है। बहरहाल, सिडनी मास्लिन (1947) सामाजिक क्रिया का कार्य क्षेत्र सीमित करती हैं। इनके अनुसार समाज कार्य की वह प्रक्रिया है जो कि मुख्यतः सुनिश्चित करके जन समस्याओं का समाधान करने में प्रयोग होती है। बैलडविन ने सामाजिक क्रिया के कार्यक्षेत्र को व्यापक बताते हुए इसे सामाजिक प्रणाली में संरचनात्मक परिवर्तन लाने का साधन/माध्यम कहा है। बैलडविन (1966) ने सामाजिक क्रिया को समाज कार्य या समाज सेवा से भिन्न मानते हुए इसे सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं में परिवर्तन लाने के लिए संगठित प्रयास के रूप में परिभाषित किया है। क्योंकि समाज कार्य और समाज सेवा में संस्थापित संस्थाओं में विशिष्ट आवश्यक परिवर्तन करना शामिल नहीं है। सामाजिक क्रिया में राजनैतिक सुधार का आंदोलन, औद्योगिक लोकतंत्र, सामाजिक कानून, जातीय और सामाजिक न्याय, धार्मिक स्वतंत्रता और नागरिक स्वतंत्रता शामिल हैं तथा इसकी तकनीकें प्रचार, अनुसंधान और लॉबी बनाना (पैरवी) आदि हैं। इसी विचारधारा में फ्रीडलैंडर (1977) सामाजिक कार्य को सामाजिक कार्य दर्शन और व्यवहार के ढांचे में उन व्यक्ति, समूह या सामुदायिक प्रयासों के रूप में परिभाषित करते हैं जिनका उददेश्य, सामाजिक नीतियों को संशोधित करना, सामाजिक कानून, स्वास्थ्य और कल्याण सेवाओं में सुधार करने, तथा सामाजिक प्रगति करना है। ऐसे ही विचार ली (1937) द्वारा प्रकट किए गए हैं जिसका कथन है, 'सामाजिक क्रिया ऐसे प्रयासों का सुझाव प्रतीत होता है जो प्रचलित सामाजिक परंपराओं में परिवर्तन के लिए कानून या सामाजिक संरचना में बदलाव लाने या नए आंदोलन की पहल करने वाले होते हैं।

कोइल (1937) के अनुसार सामाजिक क्रिया सामाजिक वातावरण को ऐसे तरीकों से परिवर्तित करने का प्रयास है जिससे जीवन को और अधिक सन्तोष जनक बनाया जा सके। इसका उद्धेश्य व्यक्तियों को नहीं अपितु सामाजिक संस्थाओं; कानूनों; रीतिरिवाजों, तथा समुदायों को प्रभावित करना है। फीच (1940) के अनुसार सामाजिक क्रिया कानूनी सीमाओं में रहते हुए किया गया वह कार्य है जो किसी समूह या सामूहिक कार्य को

प्रोत्साहित करने वाले व्यक्ति के द्वारा कानूनी और सामाजिक रूप से वांछित उददेश्यों को पूरा करने के उद्धेश्य से संबंधित है। हिल (1951) के द्वारा सामाजिक क्रिया का एक व्यापक दृष्टिकोण दिया गया है जिसके अनुसार सामाजिक क्रिया वह संगठित सामूहिक प्रयास है जिसके द्वारा लोगों की सामाजिक समस्याएं हल करने या बुनियादी सामाजिक और आर्थिक दशाओं या परंपराओं को प्रभावित करते हुए वांछित सामाजिक उद्धेश्यों को पूरा करने की कोशिश की जाती है।

सामाजिक क्रिया उन संगठित सामाजिक कल्याण गतिविधिओं से संबंधित है जो सामूहिक रूप से सामाजिक वातावरण का निर्माण करने वाली सामाजिक संस्थाओं और नीतियों को स्वरूप प्रदान करने, संशोधित करने या बनाए रखने के लिए निर्देशित होती हैं। विकेंडोन, (1956) सोलेंडर (1957) का कहना है कि समाज कार्य के क्षेत्र के रूप सामाजिक क्रिया समाज कार्य व्यक्ति, समूह या अंतर-समूह के प्रयासों की एक प्रक्रिया है जिसका संदर्भ समाज कार्य ज्ञान, दर्शन एवं दक्षताओं के अन्दर ही है। इसका उददेश्य अधिक प्रगति और श्रेष्ठतम सेवाएं प्राप्त करने के लिए सामाजिक नीतियों और सामाजिक संरचना की कार्यप्रणाली में परिवर्द्धन के द्वारा, समाज के कल्याण में वृद्वि करना है। इसलिए यह स्पष्ट है कि सामाजिक क्रिया को सामाजिक कानून के साथ संरचनात्मक परिवर्तन करने की पद्धति के रूप में अवलोकन किया गया है।

आइए अब हम सामाजिक क्रिया की परिभाषा और कार्यक्षेत्र के बारे में भारतीय समाज कार्य लेखकों के विचार जाने। मूर्ति (1966) के अनुसार सामाजिक कार्य के कार्यक्षेत्र में आपात् परिस्थितियों जैसे आग लगना, बाढ, महामारी, भूखमरी आदि में कार्य करने के साथ सामाजिक कानून सुनिश्चित करना शामिल है। नानावटी (1965) का विचार है कि सामाजिक क्रिया सामूहिक और सामुदायिक प्रयासों की समझ के द्वारा अभीष्ट परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है। सामाजिक क्रियाएं सामाजिक कानून बनाने मात्र से ही समाप्त नहीं हो जाती अपितु नीतियों का कार्यान्वयन ही सामाजिक क्रिया की सफलता या असफलता की वास्तविक परिचायक है। गांधीवादी अध्ययन संस्थान सामाजिक क्रिया को उस सामाजिक कल्याणकारी कार्य पर सामान्यत: लागू होने वाला पारिभाषिक शब्द मानता है जिसकी दिशा सामाजिक संस्थाओं एवं नीतियों को आकार देना या संशोधन करना हैं जो हमारे सामाजिक वातावरण को बनाती है जिसमें हम रहते हैं।

इसी तरह, सिंह (1986) का कथन है कि सामाजिक क्रिया जिसमें कुछ कुलीन और/या स्वयं लोगों द्वारा परिवर्तन लाने का सजग, व्यवस्थित और संगठित प्रयास की प्रक्रिया है, जो कमजोर और वंचित वर्गों की सामाजिक कार्य प्रणाली को सीमित करने वाली समस्याओं के हल करने और स्थितियों को सुधारने में साधक है। व्यावहारिक धरातल पर

यह सामाजिक क्रांति की तुलना सामाजिक सुधार के अधिक निकट है जिसका उददेश्य विद्यमान समग्र सामाजिक संरचना को नष्ट कर नई सामाजिक संरचना का निर्माण करना है। इसका स्वरूप संघर्षात्मक तो है लेकिन हिंसक नहीं।

सामाजिक क्रिया का उद्धेश्य सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण को उचित स्वरूप प्रदान करना तथा उसका विकास करना है जिसमें सभी नागरिकों के लिए उचित और सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करना संभव हो सके। मिश्रा (1992) ने सामाजिक क्रिया के निम्नलिखित लक्ष्य बताएं हैं :

1) आवश्यकताओं को पूरा करना;

2) जन समस्याओं को हल करना;

3) समाजिक जनमानस की स्थितियों में सुधार लाना;

4) संस्थाओं, नीतियों और परंपराओं को प्रभावित करना,

5) नई तंत्र प्रणालियां और कार्यक्रमों को लागू करना;

6) शक्ति और संसाधनों (श्रम, सामग्री और नीति) का पुनर्वितरण करना;

7) निर्णय करना;

8) विचार और कार्य संरचना पर प्रभाव डालना; और

9) स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण में सुधार करना।

इस प्रकार हम देखते है कि सामाजिक क्रिया व्यावसायिक समाज कार्य की वह पद्धति है जिसका प्रयोग लोगों के जीवन को प्रभावित करने या अनुकूल बनाने वाली सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक वास्तविकताओं के बारे में लोगों को जागरुक बनाने की प्रक्रिया के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने या रोकने के लिए किया जाता है। यह कार्य बिना हिंसा के समुचित रूप से बनाई गई रणनीतियों के उपयोग के माध्यम से वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए लागों को सक्रिय और संगठित करने के द्वारा किया जाता है। इसमें हिंसा अपवाद स्वरूप होता है। सामाजिक क्रिया के कुछ उदाहरण–मध्यकालीन भारत में अंधविश्वास, रूढ़िवादी धार्मिक परंपराएं तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को लक्ष्य बना कर चलाए गए सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन हैं। इन सामाजिक क्रियाओं का मुख्य सिद्धांत न्याय, समानता और भाई-चारे के सिद्धांतों पर आधारित मानवीय स्वरूप था।

## सामाजिक क्रिया के सिद्धांत

गांधी जी के गीतशीलता के सिद्धांत के सामाजिक क्रिया के प्रत्यक्ष गतिशील मॉडल का विशिष्ट उदाहरण मानते हुये ब्रिटु (1984) ने सामाजिक क्रिया के निम्नलिखित सिद्वांत प्रतिपादित किए हैं

**विश्वसनीयता के निर्माण का सिद्धांत** : यह आंदोलन के नेतृत्व, संगठन तथा भागीदारों की न्याय़, इमानदारी और सच्चाई के समर्थक के रूप में सार्वजनिक छवि बनाने का कार्य है। यह विरोध, संदर्भित जनता और आंदोलन के सीमान्त भागीदारों से उचित मान्यता प्राप्त करने में सहायता करता है।

निम्नलिखित एक या अनेक प्रकार से विश्वसनीयता बनाई जा सकती है ;

1) **विरोधी के समक्ष सद्भावना का प्रदर्शन** : इसका एक उदाहरण है जब गांधी जी इंगलैंड में थे तो प्रथम विश्वयुद्ध आरंभ हो गया था। उन्होंने पश्चिमी मोर्चे पर ब्रिटिश एम्बुलैंस कोर में सेवा के लिए कुछ छात्रों की भर्ती की। विरोधियों के प्रति इस सद्भावना के प्रदर्शन से गांधी जी की सच्चे मानवतावादी व्यक्ति की छवि प्रदर्शित हुई। उनके अहिंसावादी दर्शन ने विरोधीं, अंग्रेजों में विश्वसनीयता निर्माण प्रक्रिया को सहज बना दिया।

2) **उदाहरण प्रस्तुत करना** : वर्ष 2001 के मैंगसेसे पुरस्कार विजेता डा. राजेन्द्र सिंह ने राजस्थांन के अनेक गांवों में जल सरंक्षण का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने यह कार्य व्यापक स्तर पर जल संरक्षण आंदोलन आरंभ करने से पूर्व ग्रामीण संसाधनों (मानव श्रम, नकद राशि और वस्तुएं) को गतिशील करके, पानी रोको बांध बना कर किया।

3) **संघर्षो के लिए तात्कालिक विशिष्ट समस्याओं का चयन करना**: यदि नेतागण लोगों की तात्कालिक समस्याओं के हल करने पर जोर दे तो उनका विश्वास प्राप्त कर करते हैं। जल की कमी राजस्थान के लोगों की एक अत्यंत महत्वपूर्ण समस्या है। जब डा. आर सिंह ने इस विषय में अपने अन्तःक्षेप द्वारा पहल की तो उनकी विश्वसनीयता स्वतः स्थापित हो गई।

4) **सफलता** : सफल प्रयास, नेता और उसके द्वारा प्रस्तुत दर्शन की विश्वसनीयता स्थापित करने में सहायता करते है। राजस्थान के कुछ गांवों में डा. सिंह के कार्य की सफलता को देखते हुए राज्य सरकार ने भी उनकी सहायता करने के लिए हाथ बढाया। अनेक गांवों से स्थानीय नेता तथा गैर-सरकारी संगठनों के विशेषज्ञ भी सहायता के लिए उसके पास आए।

**वैधता का सिद्धांत :** वैधता, लक्ष्य समूह और आम जनता को विश्वास दिलाने जो की प्रक्रिया है जो कि नैतिक रूप से आंदोलन के उद्धेश्य के लिए सही हैं। अच्छा होगा, अगर आन्दोलन को एक नैतिक अनिवार्यता के मामले के रूप में पेश किया जाये। आदर्श आंदोलन के लिए नैतिक अनिवार्यता का मामला आवश्यक है। आंदोलन के नेताओं के द्वारा आंदोलन के उद्धेश्यों की ताक्रिकता स्थापित करने के लिए आध्यात्मिक, दार्शनिक, कानूनी तथा तकनीकी जनमत संग्रह का मार्ग उपयोग में लाया जा सकता है। वैधता निर्माण एक निरंतर प्रक्रिया है। कार्यक्रम आरंभ करने से पूर्व नेता अपने कार्य को न्यायोचित सिद्ध करते हैं। इसके बाद, जब संघर्ष उच्च स्तर तक पहुंचता है और नेता अपने कार्यक्रम में नए आयाम जोड़ता है तो नया समर्थन जुड़ जाता है और तब नए तक्र सामने लाए जाते हैं। यह समर्थन अकेले नेता के द्वारा नहीं किया जाता। उनकी भागीदारी के मार्ग में अनुयायी भी वैधता प्रक्रिया में अपना योगदान करने लगते हैं।

1) **वैधताकरण की आध्यात्मिक तथा धार्मिक विचारधारा :** गांधी जी ने स्वतंत्रता संघर्ष में इस विचारधारा का प्रयोग किया था। उन्होंने अंग्रेजों के अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करके धर्म की सेवा करने का अनुरोध किया था।

2) **वैधताकरण की नैतिक विचारधारा :** बाल श्रम के विरुद्ध अभियान में जुटे लोगों ने शांतिपूर्ण जलूसों, विश्वासोत्पादक भाषण, मीडिया उपयोग, विद्यालय के छात्रों को संगठित करके एवं उनमें प्रतियोगिताएं आयोजित करवा कर देश में बाल-दुरूपयोग के विरूद्ध वातावरण बनाने में सहायता की। इसके परिणाम स्वरूप किसी भी कार्य में बच्चों को नियुक्त करना नैतिक रूप से गलत समझा जाने लगा और सभी जागरुक नागरिकों का यह सुनिश्चित करना नैतिक दायित्व बन गया कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चे रोटी कमाने के स्थान पर विद्यालयों में शिक्षा के लिए जाएं।

3) **वैधताकरण की कानूनी-तकनीकी विचारधारा :** लोगों के स्वास्थ्य संबंधी अधिकार अभियान से जुडे लोगों ने अपने तर्कों के लिए मानवाधिकार विषयों, मौलिक अधिकारों तथा सबके लिए स्वास्थ्य के प्रति सरकारी प्रतिबद्धता को अपना आधार बनाया। इससे आंदोलन की विश्वसनीयता मिलती है।

**नाटकीकरण का सिद्धांत** : नाटकीकरण जन सक्रियता का सिद्धांत है जिसके द्वारा आंदोलन के नेता वीरता के प्रति भावनात्मक अनुरोध, सवेदी समाचार प्रबंधन, नवीन प्रणालियों, तीक्ष्ण नारों और ऐसे अन्य तकनीकों से लोगों को कार्य में प्रवृत करने के लिए प्रेरित करते है। जनता को सक्रिय करने वाले लगभग सभी नेता नाटकीकरण के इस सिद्धांत का पालन करते हैं। तिलक, मार्क्स, गुवेरा, पेरियार और असम आंदोलन के नेताओं ने इस सिद्धांत का सहारा लिया। नाटकीकरण के कुछ यंत्र इस प्रकार हो सकते हैं :

1) **गीतों का उपयोग** : आंदोलन के कारण को प्रस्तुत करने वाले आकर्षक गीत नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करते हैं। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान बारदोली में लोगों के उत्साह को प्रेरित करने के लिए गीत बनाने हेतु स्थानीय प्रतिभा को तैयार किया गया था। कई गायक मंडली प्रशिक्षित की गई जिन्होंने गांवों में सत्याग्रही भजन गाने के लिए बैलगाडी में एक गांव से दूसरे गांव की यात्रा की।

2) **सशक्त भाषण** : जनता को प्रेरित करने और नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने का यह भी एक महत्वपूर्ण तरीका है। त्याग और आत्मबलिदान का गांधीजी का अनुरोध रोमांचकारी था और इस कार्य का युवाओं पर विशेष प्रभाव पड़ा।

3) **महिलाओं की भूमिका** : प्रभावशाली महिलाओं को आंदोलन का मुख्य नेता बनाना आंदोलन को नाटकीय प्रभाव प्रदान करने वाली तकनीक है। राजकोट में स्वयं कस्तूरबा गांधी ने नागरिक असहयोग आंदोलन को संबोधित किया और अपने आपको पहले गिरफतार करवाया।

4) **बहिष्कार** : दोनों प्रकार से जब प्रयास सफल या असफल हों, तब जनमत को प्रभावित करने के लिए बहिष्कार एक प्रभावशाली तरीका है। विषय को नाटकीय बनाने के लिए गांधी जी ने धरना देना हड़ताल करना, स्वेच्छा से दुकानें तथा अन्य संगठन बन्द करने के तरीके अपनाए थे।

5) **नारे** : भारत छोडो, जल ही जीवन है, ड्रग्स को ना कहें, एच.आई.वी./एड्स-जानकारी ही बचाव है आदि ऐसे कुछ नारे हैं जिन्हें विभिन्न सामाजिक आंदोलनों को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

**बहुआयामी रणनीतियों का सिद्धांत** : विकास के लिए दो बुनियादी विचारधाराएं हैं: संघर्षात्मक और असंघर्षात्मक। कार्यक्रम की मुख्य आवश्यकता को देखते हुए इसे राजनैतिक, आर्थिक या सामाजिक रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। मिश्रित सिद्धांत बहुआयामी रणनीतियां अपनाने, मिश्रित विचारधारा का उपयोग करने तथा विभिन्न प्रकार के मिश्रित कार्यक्रम आयोजित करने का संकेत देता है। सामुदायिक विकास के अपने अनुभवों से जेल्टमैन और डंकन ने चार विकास कार्यनीतियों की पहचान की है। इन्हें सामाजिक क्रिया में प्रयोग के लिए तैयार किया गया है, ये हैं :

1) **शैक्षणिक रणनीतिः** इस नीति में संभावित भागीदारों को अकेले, समूह और जनसमूह स्तर पर प्रशिक्षित किया जाता है। यह सामाजिक क्रिया की मूलभूत आवश्यकता है। लोगों या लक्ष्य समूहों को विषय के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान की जाती है। लोगों को जागरुक बना कर एवं समझा कर आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जाता है। बाल श्रम के विरूद्ध अभियान में बच्चों के लिए कार्य करने वाले गैर-सरकारी संगठनों का एक नेटवर्क विकसित किया गया। इन संस्थाओं ने फिर शैक्षणिक कार्य नीति के माध्यम से अपने अपने क्षेत्रों में जागरूकता उत्पन्न की। प्रदर्शन के द्वारा शिक्षा इस सिद्धांत का महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रदर्शन का लक्ष्य जनता द्वारा जानकारी आत्मसात करने में गहरा प्रभाव होता है।

2) मनाने **की रणनीति** : मनाने की रणनीति में तक्र, प्ररेणा, प्रभाव तथा किसी विचारधारा विशेष को स्वीकार करवा कर परिवर्तन लाने के लिए कुछ कार्यों और प्रक्रियाओं को संयुक्त रूप से अपनाया जाता है। गांधी जी ने इस कार्यनीति का प्रयोग अपने विरोधियों के साथ वार्तालाप के अवसर प्राप्त करने के लिए निरंतर किया। प्रत्येक जलसे में प्रभावशाली भाषणों और तर्कों के विनम्र प्रस्तुतीकरण से हृदय परिवर्तन हुये।

3) **सुसाध्य रणनीति** : इसका अर्थ है जन आंदोलन में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी को सहज बनाने के लिए प्रक्रियाओं और गतिविधियों का मिश्रण। गांधीवादी लोगों द्वारा निर्धारित कार्यक्रम प्रायः इतने सरल और किसी भी प्रकार की जोखिम से मुक्त होते थे कि अनपढ़ बच्चे भी उसका अनुकरण करते थे और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते थे। नमक आंदोलन में गांधी जी नमक बनाने की तकनीकों में नहीं पड़े। उन्होंने अनुयायिओं से मात्र समुद्री जल को उबाल कर खाने के लायक नमक बनाने को कहा। इसकी सरलता ने व्यापक भागीदारी को सुगम बना दिया।

4) **शक्ति की रणनीति :** इच्छित उद्धेश्यों की पूर्ति के लिए इसमें बल-प्रयोग करना शामिल है। बल-प्रयोग के रूप विभिन्न हो सकते हैं। गांधीजी ने शक्ति की रणनीति कार्य की तकनीकों में सामाजिक बहिष्कार का प्रयोग किया।

5) **दोहरी विचारधारा का सिद्धांत :** किसी भी कार्यकर्ता को वह प्रतिभा वैकल्पिक व्यवस्था बनानी पडती है या कोई अनप्रयुक्त व्यवस्था को पुनजीर्वित करना पडता है जिसे विरोधी को शामिल किए बिना आत्मसहायता के आधार पर सक्रिय जनता के लिए लाभदायक समझा जाता है। यह एक स्वाभाविक आवश्यकता है जिस पर विरोधियों द्वारा स्थापित/अपनाई गई व्यवस्था को नष्ट करने के प्रयास आधारित है। गांधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम ने एक छोटे स्तर पर सत्याग्रहियों के संघर्षात्मक क्रार्यक्रमों के साथ-साथ ही कार्य का निष्पादन किया। यह सहयोगात्मक प्रयास इस बात का संकेत है कि गांधीवादियों ने अपने सक्रियात्मकता में दोहरी कार्य नीति को अपनाया।

6) **बहुआयामी कार्यक्रमों का सिद्धांत :** इसका अर्थ है ऐसे अनेक प्रकार के कार्यक्रम बनाना जिनका एक मात्र उद्धेश्य जनता को सक्रिय करना हो। इन्हें तीन बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कार्यक्रम। डा. राजेन्द्र सिंह ने जल संरक्षण के विषय को बहुआयामी कार्यक्रमों के मिश्रण के रूप में ग्रहण किया। उसके जल संरक्षण कार्यक्रम ने ग्रामीणों विशेषतः महिलाओं की बहुत सहायता की क्योंकि उन्हें जल लेने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता था। इस कार्यक्रम ने अच्छी फसलों, अच्छे पशु पालन तथा अधिक आर्थिक लाभ अर्जित करने में लोगों की सहायता की। आंदोलन के दौरान स्थानीय नेताओं, पंचायती राज की संस्थाओं और राज्य सरकार के साथ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष विरोध का समाधान आते रहे।

## सामाजिक क्रिया में शामिल दक्षताएं

सामाजिक क्रिया की अवधारणा और सिद्धांतों को समझने के बाद आइए एक नजर अब इसके लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक दक्षताओं पर डाले। ये दक्षताएं सामान्य दक्षताओं से भिन्न नहीं हैं। व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता व्यावसायिक समाज कार्य की आचार संहिता और सिद्धांतों को मिलाकर इन दक्षताओं का उपयोग करते हैं। फिर भी सामाजिक क्रिया को समाज कार्य की पद्धति के रूप में प्रयोग करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता को कुछ दक्षताओं की आवश्यकता होती है। इनमें कुछ महत्वपूर्ण दक्षताओं का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

**संबंध निर्माण दक्षता :** सामाजिक कार्यकर्ता में व्यक्तियों और समूहों के साथ साहचर्य बैठाने और संबंधों को बनाए रखने की दक्षता होनी चाहिए। उसे सेवाग्राहियों के साथ व्यावसायिक संबंध बनाए रखने में दक्ष होना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता सेवाग्राहियों के समूह में नेतृत्व के गुण पहचानने की दक्षता होनी चाहिए तथा सामाजिक क्रिया के लिए इन गुणों को काम में लेने की दक्षता भी होनी चाहिए। इसके साथ यथार्थवादी स्थानीय नेताओं के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से कार्य करने की योग्यता का भी होना आवश्यक है। उसे अंतर-समूहों तथा समूहों में आंतरिक मतभेदों को प्रभावशाली ढंग से सुलझाने में भी योग्य होना चाहिए। समुदाय में निष्ठा विकसित करने और बनाए रखने के लिए सेवाग्राहियों के समस्यामूलक व्यवहार को पहचानने और परामर्श प्रदान करने की भी आवश्यकता है। सामाजिक कार्यकर्ता को तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों को पहचानने और उनके गंभीर होने से पूर्व उन्हें निरस्त करने की भी योग्यता होनी चाहिए। एक सी भौगोलिक क्षेत्र तथा समान उद्धेश्य के लिए कार्य करने वाली अन्य एजेंसियों तथा गैर-सरकारी संगठनों के साथ मधुर संबंध बनाने तथा कायम रखने की योग्यता का भी होना आवश्यक है।

**विश्लेषणात्मक और अनुसंधान संबंधी दक्षताएं :** सामाजिक कार्यकर्ता में समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताओं का उद्धेश्य मूलक अध्ययन करने की योग्यता होनी चाहिए। उसे सेवाग्राहियों की अति आवश्यक जरुरी समस्याओं और आवश्यकताओं को जानना जरुरी है। उसे सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण एवं उनको बढ़ाने वाले कारकों तथा इनका जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैचारिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय पक्षों पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करने में योग्य होना चाहिए। उसे अनुसंधान करने और/या अनुसंधान के कार्यकारी संदर्भ में पड़ने वाले संभावित प्रभाव को भी समझने में योग्य होना चाहिए इससे भी अधिक सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा सामुदायिक लोगों को सुविधा प्रदान करनी चाहिए जिससे वे अपनी अनुभूत आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को उन्हें बताएं। सामाजिक कार्यकता द्वारा सामाजिक परिस्थिति और समस्याओं की अपनी समझ को समुदाय पर नहीं थोपनी चाहिए।

**अन्तःक्षेप की दक्षता :** आवश्यकताओं की पहचान करने के बाद, समस्या समाधान के लिए सामाजिक कार्यकर्ता में व्योवहारिक रूप से अन्तःक्षेप की रणनीति बनाने में सेवाग्राही की सहायता करने की योग्यता होनी चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता के द्वारा सेवाग्राही को अनेक विकल्पों का सुझाव देना चाहिए और उचित कदम उठाने के लिए प्रत्येक सुझाव के पक्ष एवं विपक्ष का विश्लेषण करने में उनकी सहायता करनी चाहिए। सामाजिक क्रिया

में अधिकारियों से टकराव हो सकता है। सामाजिक कर्ता द्वारा कठोर कदम जैसे धरना देना, बहिष्कार करना, हड़ताल आदि के परिणामों के बारे में समुदाय को अवश्य सूचित कर देना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता के निर्धारित लक्ष्य प्राप्त होने तक जन आंदोलन के असफल होने की संभावना को न्यूनतम करने के लिए सामुदायिक लोगों में दीर्घवधि तक आवश्यक परिवर्तन, उत्साह और हिम्मत लाने के लिए वांछित स्तर तक असंतोष की भावना और भावात्मक आवेग को बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता में धैर्य और संतुलित व्यवहार बनाए रखने की योग्यता होनी चाहिए क्योंकि उसे तक्रसंगत ढंग से सेवाग्राहियों के भावात्मक संतुलन को देखना होता है।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक कार्यकर्ता में ऐसा सकारात्मक वक्तावरण बनाने की योग्यता होनी चाहिए जिसमें व्यक्ति और समूह सक्रियता से भाग ले सके। अन्तःक्षेप का कार्य तात्कालिक एवं आवश्यकता, संसाधन (मानव और सामग्री) तथा समुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को ध्यान में रख कर बनाया जाना चाहिए। उसे लक्षित अन्तःक्षेपों की प्राप्ति के लिए स्थितियों को बनाने में समर्थ होना चाहिए।

**प्रबंधन संबंधी दक्षता** : सामाजिक कार्यकर्ता में संगठन के संचालन का ज्ञान और दक्षता का होना भी आवश्यक है क्योंकि संगठन लोगों की भागीदारी के परिणामस्वरूप संस्थागत हो सकता है। उसे वांछित अन्तःक्षेप के लिए विभिन्न समूहों और स्थानीय नेताओं के साथ समन्वय और सहकार में भी दक्ष होना चाहिए ताकि सेवाग्राहियों को संगठित किया जा सके। उसे नीतियों और कार्यक्रमों, कार्यक्रम की योजना बनाने, समन्वय स्थापित करने, रिकार्ड एव बजट बनाने, सादा लेख-जोखा रखने और विभिन्न प्रकार के रिकाडों के रख-रखाव में पर्याप्त दक्षता होनी चाहिए। उसे धन मानवीय सामग्री, उपकरण आदि के रूप में आंतरिक/बाहरी संसाधनों को गतिशील/क्रियाशील करने में दक्ष होना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता लक्षित समुदाय के कल्याण और विकास के लिए मानव और सामग्री संसाधनों और उनका प्रभावी उपयोग करने में पर्यवेक्षण सबंधी दक्षता का होना भी आवश्यक है।

**संप्रेक्षण दक्षता** : ये दक्षताएं सामाजिक क्रिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक कार्यकर्ता को स्थानीय संगठनों और स्थानीय नेताओं के साथ प्रभावशाली संबंध बनाने में दक्ष होना चाहिए। उसे मौखिक (सार्वजनिक भाषण सहित) एवं लिखित संप्रेषण में भी दक्ष होना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता को जोरदार भाषण देने या जोरदार भाषण देने वाले लोगों की पहचान करना भी आना चाहिए। उसे विभिन्न जनसमूहों के लिए प्रभावशाली संप्रेषण के लिए सुयोग्य आंतरिक/बाहरी मीडिया का मूल्यांकन और स्थानीय जनसंचार,

लोकगीत आदि तथा प्रचार के व्यापक माध्यमों के उपयोग में सक्षम होना चाहिए। ये दक्षताएं नारे बनाने, प्रेरक गीत बनाने, भाषणों और जनता को सक्रिय करने के लिए आई ई सी (सूचना शिक्षा एवं संचार) सामग्री तैयार करने के लिए काम में लाई जाती है। सामाजिक कार्यकर्ता में आवश्यकतानुसार स्थानों पर लोगों को शिक्षित करने, सुगम बनाने, समझौता करने और आवश्यक कार्य के लिए मनाने की दक्षता भी होनी चाहिए।

**प्रशिक्षण की दक्षताएं :** सामाजिक कार्यकर्ता में स्थानीय नेताओं को प्रशिक्षित करने तथा जनता को सक्रिय करने और अधिकारियों से विवाद करने वाले नेताओं को पहचानने की भी योग्यता होनी चाहिए। उसमें स्थानीय स्तर पर कुछ चुने हुए लोगों को स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित टकराव प्रक्रिया सहित कार्य के उठाए गए सामाजिक मुद्दों और अन्तःक्षेप करने के तरीके के बारे मे जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। इन लोगों को हाथ में लिए गए सामाजिक विषय के पक्ष या विपक्ष में जनमत तैयार करने तथा। लोगों की पहचान कर सामाजिक क्रिया में शामिल करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इन लोगों को हिंसा किए बिना सामाजिक क्रिया की रणनीतियों और पद्धतियों (विवाद, मनाना, समझौता करना, बहिष्कार करना आदि) का उपयोग करने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

## नाजुक मुददे

आइए अब हम कुछ ऐसे विषयो पर नजर डालें जो सामाजिक क्रिया के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जनता की सक्रियता की सफलता को प्रभावित करते हों। जैसा पहले वर्णन किया जा चुका है कि सामाजिक क्रिया अनेक प्रकार की रणनीतियों और पद्धतियों (जिनका विस्तृत वर्णन अगली इकाइयों में किया जाएगा) का प्रयोग करती है तथा अनेक भागीदारों की सक्रिय भूमिका लक्षित करती है। बहुआयामी रणनीतिया, और विभिन्न प्रकार के भागीदारों का शामिल करने के लिए सतर्क (स्वस्थ) योजना निर्माण तथा सावधानीपूर्वक उनका कार्यान्वयन करने की आवश्यकता होती है। यदि इन कार्यों को पहले से संबोधित नहीं किया गया तो इनसे अन्तःक्षेप की प्रक्रिया में बाधा लाई जा सकती है और कभी-कभी नियोजित अन्तःक्षेप की योजना को असफल कर सकते हैं। एक व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा ध्यान देने वाले आवश्यक विषय इस प्रकार हैं:

### सेवार्थीगण को सशक्त बनाना

किसी भी सामाजिक मुददा, जिसके लिए सामाजिक क्रिया की जाती है, के मूल में केन्द्रित उद्धेश्य सेवाग्राही समूह या समुदाय को सशक्त बनाना होता है। सामाजिक क्रिया की

प्रक्रिया में जिस समूह के लक्ष्य की पैरवी की जाती है उसे सशक्त बनाया जाना चाहिए तथा उसकी दक्षता और शक्ति में विकास किया जाना चाहिए ताकि समुदाय के विकास के लिए सामान्य संसाधनों तक उसकी पहुंच हो सके। सामाजिक क्रिया का अंतिम लक्ष्य सबंधित भागीदारों की एक समान साझेदारी, निर्णय निर्माण में लोकतांत्रिक प्रक्रिया की अनुमति तथा वंचित संसाधनों तक वास्तविक पहुंच और उपयोग को सुनिश्चित करवाना होता है तथा प्रावधान करना है। सामाजिक कार्यकर्ता को समय समय पर सशक्तिकरण के समग्र लक्ष्य के संदर्भ में सामाजिक क्रिया की प्रगति का मूल्यांकन समीक्षा और प्रबोधन करते रहना चाहिए। इस लक्ष्य से किसी प्रकार का विचलन होने पर सामाजिक क्रिया का दर्शन असफल हो सकता है और शक्ति तथा संसाधन कुछ स्वार्थी लोगों के हाथ में केन्द्रित हो सकते हैं। इससे उस पूरे समूह या समुदाय के साथ अन्याय होगा जिसकी भलाई (मुद्दा) के लिए सामाजिक क्रिया की जा रही है

## गुटबाजी से निपटना

सामाजिक क्रिया अन्यायपूर्ण अधिकार समीकरणों और अनुचित संसाधनों के वितरण के सन्दर्भ में प्रश्न उठाती है। इसमें शक्ति और संसाधन संपन्न लोगों के साथ टकराव निहित है। इस प्रक्रिया में निहित स्वार्थी सदस्यों के समूह बन सकते हैं, हो सकता है जो सामने न आए। ये समूह नेतृत्व ग्रहण कर सामाजिक कार्यकर्ता को अपने पक्ष में प्रभावित करने का प्रयत्न कर सकते है। किसी भी प्रकार का विरोध अन्तर-समूह तनाव और संघर्ष उत्पन्न कर सकते हैं। परिस्थिति के आधार पर इसका प्रतिकार करना काफी भयानक एवं चुनौतीपूर्ण भरा हो सकता है। योजना निर्माण के स्तर पर ही सामाजिक कार्यकर्ताओं को ऐसी संभावनाएं भाँप कर स्थिति को न्यायसंगत एवं युक्तिपूर्ण तरीके से संभालना चाहिए।

## जिम्मेदारी

व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता को सभी भागीदारों के बीच स्थाई तथा निरंतर विचार-विमर्श सुनिश्चित करना पड़ता है तथा आंदोलन को सकारात्मक वैधता प्रदान करने के लिए स्पष्ट जिम्मेदारी तथा पारदर्शिता की प्रक्रिया बनाए रखी जाती है। कोई गलत संप्रेषण या नकारात्मक संप्रेषण से विश्वसनीयता समाप्त हो सकती है और इसके बदले संपूर्ण सामाजिक क्रिया प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।

### सही गठबंधन बनाना

सफलता की समाजिक क्रिया की प्रक्रिया विभिन्न प्रकार के भागीदारों को किसी लक्ष्य या मुद्दे की प्राप्ति के लिए आमंत्रित करती है। सामाजिक कार्यकर्ता के लिए इन भागीदारों के नजरिये तथा सामाजिक क्रिया में उनकी रुचि के स्तर को जानने की योग्यता होना अनिवार्य है। तभी सामाजिक कार्यकर्ता सामाजिक क्रिया की प्रक्रिया में प्रभावशाली ढंग से उनकी क्षमताओं और दक्षताओं का उपयोग करने में समर्थ हो सकेगा। ऐसा करते समय हो सकता है कि सामाजिक कार्यकर्ता को कार्य आगे बढ़ाने के लिए कई लोगों और

संगठनों के साथ गठजोड़ और सांझेदारी करनी पड़ सकती है। इसलिए हो सकता है कुछ लोगों के प्रति सावधानी के साथ लक्षित समूह के हितों की रक्षा करनी पड़े क्योंकि वे अपने नीहित स्वार्थ (लाभ) के लिए सामाजिक क्रिया का उपयोग कर सकते हैं और यहां तक कि आंदोलन को हल्का करने, तथा इस प्रकार सामाजिक क्रिया के लक्ष्य की प्राप्ति को परास्त कर सकते हैं। वास्तव में उन लोगों को अवसर देने से आंदोलन जोखिम मे पड़ सकता है और स्वयं को वास्तविक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सिद्ध करने में सफल हो सकते हैं। वास्तव में सामूहिक आंदोलन की तुलना में अपने व्यक्तिगत हितों का पोषण करते हैं।

### गौण एवं मुख्य विषयों में संतुलन बनाना

सामाजिक क्रिया को प्रायः नीति परिवर्तन और कानूनों में संशोधन करते समय लघु विषयों से व्यापक विषयों पर आना पडता है। इसे एक ऐसे संगठन के उदाहरण द्वारा सिद्ध किया जा सकता है जो गली में खेलने वाले बच्चों के लिए कार्यरत है और उन्हें शिक्षा प्रदान करता है। फिर भी जैसे जैसे कार्य में प्रगति होती है तो संगठन बच्चों संबंधी नीतियां बनाने तथा उनमें परिवर्तन के लिए ऐसे कई संगठनों के साथ संबंध बनाने लगता है।

### गैर-राजनीतिक होना

सामाजिक क्रिया के लिए राजनैतिक स्थिति की स्पष्टता और समझ अनिवार्य है। बहरहाल, राजनीति से अभिप्रायः दलगत राजनीति या औपचारिक राजनीति करना नहीं है। अगर सामाजिक कार्यकर्ता की कोई राजनीतिक सम्बद्धता है तो उससे सामाजिक क्रिया द्वारा सम्पन्न किये जाने वाला कार्य अवैध हो सकता है और उसी समय सामूहिक हितों की तुलना में किसी एक दल के हितों को बढावा देने से आंदोलन के वास्तविक उद्देश्य जोखिम में पड़ सकते हैं।

## सारांश

सामाजिक क्रिया व्यावसायिक सामाजिक कार्य की एक गौण पद्धति है। इसका उपयोग सामाजिक व्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन करने या नकारात्मक परिवर्तनों को रोकने के लेए किया जाता है। कुछ सामाजिक समस्याएं जैसे पर्यावरण संतुलन, बंधुआ मजदूर, बाल श्रमिक, महिला सशक्तिकरण, मादक द्रव्य का दुरूपयोग आदि सामाजिक क्रिया के द्वारा हल की जा सकती हैं। सामाजिक क्रिया का मुख्य उद्धेश्य जन समस्याओं का समाधान करना, जनता की परिस्थितियों में सुधार करना और अधिकार एवं संसाधनों (श्रम, सामग्री और नैतिक) का पुनर्वितरण करना है।

**सामाजिक क्रिया के सिद्धांत निम्न है:**

क) विश्वसनीयता के बढ़ाने का सिद्धांत

ख) वैधता का सिद्धांत

ग) नाटकीयकरण का सिंद्धांत

घ) बहुआयामी रणनीतियों का सिद्धांत

ड़) दोहरी विचारधारा का सिद्धांत

च) बहुआयामी कार्यक्रमों का सिद्धांत

एक सामाजिक कार्यकर्ता जो समाज कार्य की पद्धति के रूप में, सामाजिक क्रिया का प्रयोग करता है। उसे कुछ दक्षताओं की आवश्यकता होती है। ये इस प्रकार हैं:

क) संबंधात्मक दक्षताएं अर्थात लोगों के साथ ताल मेल बैठाने और विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए प्रभावशाली ढंग से संबंध बनाना

ख) विश्लेषणात्मक दक्षताएं अर्थात् सामाजिक स्थिति और सामाजिक समस्या की वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिक आधार पर विश्लेषण करने की समर्थता

ग) अन्तःक्षेप संबंधी दक्षताओं की आवश्यकता सेवाग्राहियों की अपनी सामाजिक समस्याओं के निवारण के लिये व्यवहारिक अन्तःक्षेप की रणनीतियां बनाने के लिए आवश्यक मदद करती है।

घ) विभिन्न समूहों और स्थानीय नेताओं के साथ समन्वय और सहकार करने के लिए प्रबंधन दक्षताएं आवश्यक होती हैं ताकि वांछित अन्तःक्षेप के लिए सेवाग्राहियों में एकता लाई जा सके।

ड़) आवश्यक स्थानों पर जरुरी कार्यों के लिए शिक्षित करने, सुगम बनाने, समझौता करने तथा मनाने के लिए संप्रेषण दक्षताएं आवश्यक हैं।

च) प्रशिक्षण दक्षताएं अर्थात सामाजिक कार्यकर्ता में नेताओं को प्रशिक्षित करने की भी योग्यता होनी चाहिए ताकि वे जनता को सक्रिय करने और अधिकारियों का मुकाबला करने का कार्यभार उठा सके।

सामाजिक क्रिया की सफलता को प्रभावित करने वाले कुछ नाजुक मुददे हैं – सेवाग्राहियों को सशक्त बनाना जो कि सामाजिक क्रिया का आन्तरिक उद्धेश्य है, अंतः समूह और अंतर समूह विवादों से निपटना, जिम्मेदारी तथा पारदर्शिता, उपयुक्त लोगों और संगठनों से गठबंधन करना, गौण समस्याओं से मुख्य समस्याओं पर ध्यान परिवर्तित करना और राजनीति में शामिल होने से बचना।

## कुछ उपयोगी पुस्तकें

ब्रिट्टो जी ए.ए. (1984), *सोशल एक्शन एंड सोशल वर्क एज्यूकेशन इंन द एटीज, इन सोशल वर्क एंड सोशल एक्शन* (इडी.) एच.वाई. सिद्दीकी, हरनाम पब्लिकेशन

ब्रिटट्रो : जी.ए.ए. (1984), *समप्रिंसीपुल्स आफ सोशल एक्शन, इन सोशल वर्क एंड सोशल एक्शन* (इडी.) एच.वाई. सिद्दकी, हरनाम पब्लिकेशन चौधरी

चौधरी,डी. पाल (1992), *इंट्रोडक्शन टू सोशल वर्क,* आत्मा राम एंड संस, दिल्ली

डेविस, मार्टिन (2000), *द ब्लैंकवैल इनसाइक्लोपीडिया आफ सोशल वर्क* (इडीएस.) ब्लैंकविल पब्लिशर्स, मसकसेट्स; पी.पी. 317-318

फ्रीडलेंडर, डब्ल्यू.ए. (1977), *इंट्रोडक्शन टू सोशल वेलफेयर,* प्रिंट्रस हिल, नई दिल्ली

मिश्रा पी.डी. (1992), *सोशल वर्क फिलोस्फी एंड मैथडस,* इंटर इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली

मूर्त्ति, एम.वी (1966), *सोशल एक्शन,* एशिया पब्लिसिंग हाउस, बंबई

नानावटी, एम.सी. (1965), *सोशल एक्शन एंड द प्रोफेसनल सोशल वर्क,* सोशल वर्क फोरम, वोल्यू III नं 2 पी.पी. 26-29 पाठक, एस. एच. (1971) : सोशल वेलफेयर, हेल्थ एंड फेमिली प्लानिंग, नई दिल्ली

सिद्दकी, एच.वाई. (1984), *सोशल वर्क एंड सोशल एक्शन*, इडी. हरनाम पब्लिकेशन

सिंह, सुरेन्द्र (1986), '*सोशल एक्शन इन होरिजोंस आफ सोशल वर्क* (इडी.) बाई सुरेन्द्र सिंह एंण्ड के. एस. सूदन, ओपी.सी.आई.टी पृ. 161